

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मुरझाया फूल

महादेवी वर्मा

भाग – 4

अभ्यासमाला

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की _____ श्रृंगारती थी सर्वदा।'

(ई) प्रसंग सहित व्याख्या करो (लगभग 100 शब्दों में):

1. 'स्निग्ध किरणें चंद्र की _____ श्रृंगारती थी सर्वदा।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है। इसकी लेखिका महादेवी वर्मा हैं। इस कविता में कली के फूल बनकर खिलने से मुरझाकर गिरने तक के सफर का खूबसूरती से वर्णन किया गया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: चंद्रमा की कोमल और स्निग्ध किरणें फूल को हमेशा हंसाती थीं, यानी उसकी शोभा बढ़ाती थीं और उसे सुंदर बनाती थीं। साथ ही ओस की बूँदें जैसे मुक्त जाल के रूप में फूल पर गिरतीं और उसे सजातीं। इससे फूल का श्रृंगार होता और उसकी सुंदरता चारों ओर फैलती। यहाँ कवयित्री ने फूल की कोमलता और प्राकृतिक सजावट के माध्यम से उसकी पूर्णता और आकर्षण को दर्शाया है। चंद्रमा और ओस दोनों ही फूल के जीवन में सौंदर्य और प्रेम का प्रतीक हैं।

2. ‘कर रहा अठखेलियाँ _____ था कभी क्या ध्यान में।’



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. 'कर रहा अठखेलियाँ _____ था कभी क्या ध्यान में।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक-भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है जिसकी रचयिता महादेवी वर्मा है, जिन्होंने कली के फूल बनने से उसके मुरझाकर, धरा पर गिरने तक के सफर का वर्णन किया है।

व्याख्या: फूल जब कली से फूल बनकर खिलता है और सारे बागीचे की शोभा बन सबका ध्यान अपनी ओर खींचता रहता है तो वह खुद पर इतराता है और उसकी हवा के साथ, भौंरों के साथ अठखेलियां (मस्ती) बढ़ जाती है। उसे आने वाले अपने दुखद अंत का ध्यान नहीं होता। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी अपने जीवन काल की मस्तियों में यह भूल जाता है कि आने वाला समय उनके लिए क्या ला सकता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. ‘मत व्यथित हो पुष्प ..... यहाँ करतार ने।’



3. 'मत व्यथित हो पुष्प..... यहाँ करतार ने।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक' आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है जिसकी रचयिता हैं महादेवी वर्मा। इस कविता में फूल के खिलने से मुरझाने तक की अवस्था का जीवंत वर्णन किया गया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: कवयित्री मुरझाए हुए फूल से कहती हैं कि उसे अपनी उपेक्षित स्थिति पर दुखी नहीं होना चाहिए। संसार में सुख और दुख का चक्र निरंतर चलता है और ईश्वर ने इसे स्वार्थपरक बनाया है। जब फूल खिला और सुगंध फैलाता था, लोग उसके पास आते और उसकी सराहना करते थे, लेकिन अब उसका आकर्षण कम होने पर सब भूल गए हैं। यह उसकी गलती नहीं, बल्कि संसार की स्वाभाविक प्रकृति है। निस्वार्थ होने पर भी उपेक्षा मिलना सामान्य है।

4. जब न तेरी ही दशा पर.... हमसे मनुज निस्सार को।'



4. जब न तेरी ही दशा पर.... हमसे मनुज निस्सार को।'

उत्तर- प्रसंगः प्रस्तुत पंक्ति हमारी पाठ्य पुस्तक 'आलोक भाग 1' के 'मुरझाया फूल' नामक कविता से ली गई है। इसकी रचयिता महादेवी वर्मा हैं। इन पंक्तियों का अर्थ यह है कि यदि निस्वार्थ फूल के अंत पर भी दुनिया दुखी नहीं होती, तो स्वार्थी मनुष्य के लिए शोक की उम्मीद व्यर्थ है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या: फूल को सांत्वना देते हुए कवि स्वयं (मनुष्य जाति) पर कटाक्ष करते हैं। वे कहते हैं कि जब तुम्हारे जैसे परोपकारी और सुंदर जीव के अंत पर यह संसार चुप है, तो फिर हम जैसे "निस्सार" मनुष्यों के लिए कौन रोएगा? कवयित्री ने यहाँ मनुष्य को 'निस्सार' (सारहीन या तुच्छ) इसलिए कहा है क्योंकि मनुष्य अक्सर स्वार्थ, क्रोध और ईर्ष्या में अपना जीवन बिता देता है।

भाषा-अध्ययन —

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो:

- श्रीगणेश करना-
- आँखों का तारा-
- नौ दो ग्यारह होना-
- हवा से बातें करना-
- अंधे की लकड़ी-
- लकीर का फकीर होना-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा-अध्ययन —

1. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग करो:

➤ श्रीगणेश करना-

अर्थ: किसी कार्य की शुरुआत करना।

वाक्यः नये वर्ष की शुरुआत में उन्होंने अपने घर के कामों का श्रीगणेश किया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ आँखों का तारा-

अर्थः बहुत प्रिय या प्यारा व्यक्ति।

वाक्यः प्रत्येक बच्चा अपने माँ-पिता की आँखों का तारा होता है।

➢ नौ दो ग्यारह होना-

अर्थः अचानक भाग जाना या गायब हो जाना।

वाक्यः चोरी पकड़ते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ हवा से बातें करना-

अर्थ: बहुत तेज़ दौड़ना

वाक्य: दौड़ प्रतियोगिता में राहुल का घोड़ा हवा से बातें करने लगा।

➢ अंधे की लकड़ी-

अर्थ: एकमात्र सहारा

वाक्य: पढ़ा-लिखा और आज्ञाकारी इंसान अपने वृद्ध माता-पिता के लिए अंधे की लकड़ी के समान होता है।"

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

➢ लकीर का फकीर होना

अर्थ: किसी बात को दिमाग में बिठा लेना।

वाक्य: आज के दौर में प्रगति के लिए लकीर का फकीर होना छोड़ना होगा।

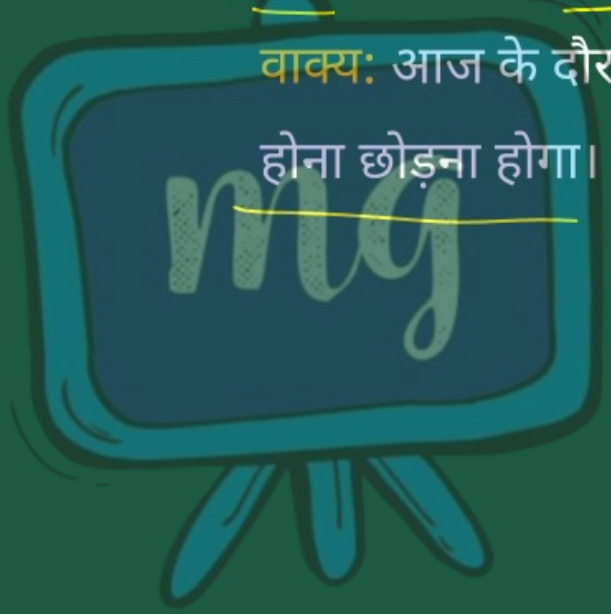

2. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो:

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

2. निम्नांकित काव्य-पंक्तियों को गद्य-रूप में प्रस्तुत करो:

(क) खिल गया जब पूर्ण तू,
मंजूल सुकोमल फूल बन।
लुब्ध मधु के हेतु मँडराने
लगे, उड़ते भ्रमर॥

उत्तरः जब तुम पूरी तरह विकसित होकर सुंदर और कोमल फूल बन गए, तब तुम्हारे रस को पाने के लिए भौरे तुम्हारे चारों ओर मंडराने लगे।

(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥



(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥



(ख) जिस पवन ने अंक में
ले प्यार था तुझको किया।
तीव्र झोंके से सुला
उसने तुझे भू पर दिया॥

उत्तरः जिस पवन ने तुम्हें अपनी गोदी में लेकर प्यार किया था और तुम्हारे साथ खेला, उसी ने अब अपनी तीव्र झोंकों से तुम्हें जमीन पर गिरा दिया है।

3. लिंग-निर्धारण करो:

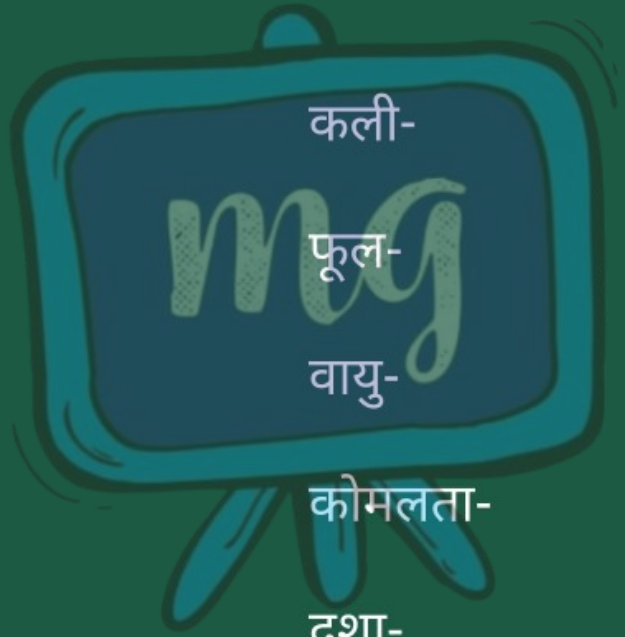

कली-

फूल-

वायु-

कोमलता-

दशा-

शैशव-

किरण-

माली-

सौरभ-

3. लिंग-निर्धारण करो:



कली- स्त्रीलिंग

फूल- पुल्लिंग

वायु- स्त्रीलिंग

कोमलता- स्त्रीलिंग

दशा- स्त्रीलिंग

शैशव- पुल्लिंग

किरण- स्त्रीलिंग

माली- पुल्लिंग

सौरभ- पुल्लिंग

4. वचन परिवर्तन करो:



भौंरा-

अठखेलियाँ-

चिड़िया-

बात-

किरणें-

झोंके-

रेखाएँ-

कली-

4. वचन परिवर्तन करो:

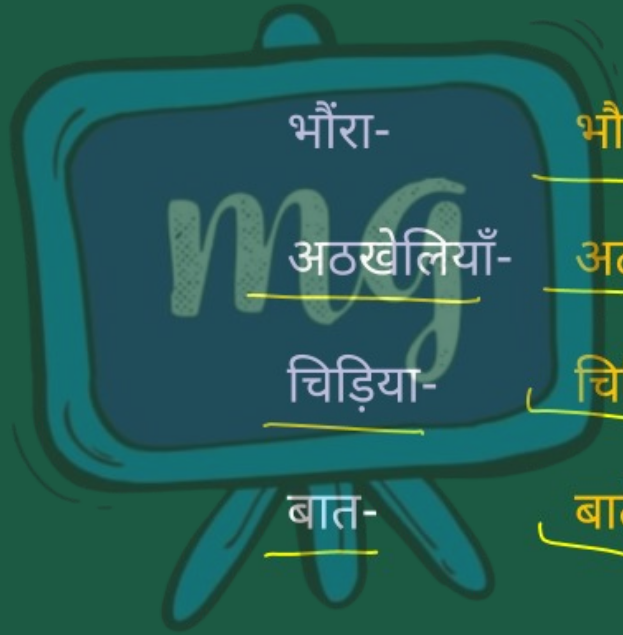

भौंरा-	भौरे	किरणें-	किरण
अठखेलियाँ-	अठखेली	झोंके-	झोंका
चिड़िया-	चिड़ियाँ	रेखाएँ-	रेखा
बात-	बातें	कली-	कलियाँ

5. लिंग परिवर्तन करो:



कवयित्री-

पिता-

प्राचार्या-

देव-

प्रियतम-

पुरुष-

माली-

मोरनी-

5. लिंग परिवर्तन करो:

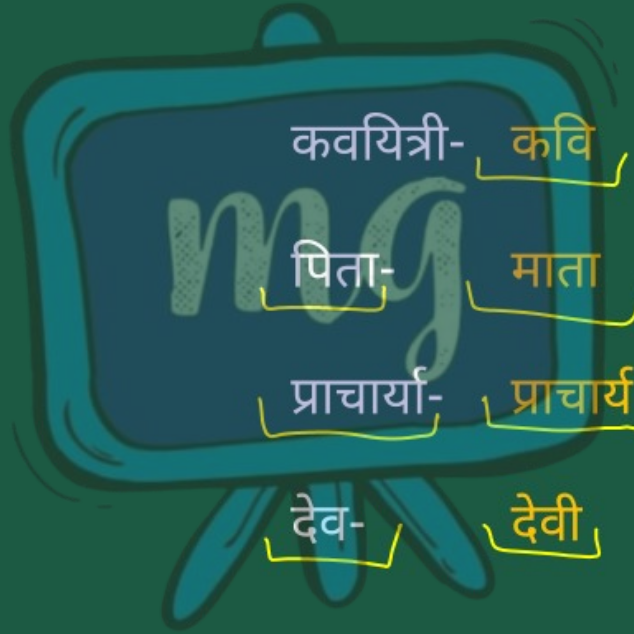

कवयित्री- कवि

पिता- माता

प्राचार्या- प्राचार्य

देव- देवी

प्रियतम- प्रियतमा

पुरुष- महिला

माली- मालीन

मोरनी- मोर

6. कार शब्दांश के पूर्व आ, वि, प्र, उप, अप और प्रति उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।



6. कार शब्दांश के पूर्व आ, वि, प्र, उप, अप और प्रति उपसर्ग जोड़ कर शब्द बनाओ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो।

आ+ कार = आकार-उस डब्बे का आकार गोल है।

वि+ कार = विकार - गुस्से और लालच मन में विकार पैदा कर सकते हैं।

प्र+कार = प्रकार – इस कमरे में किताबें विभिन्न प्रकार की रखी हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उप + कार = उपकार- उसने मेरी सहायता करके मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है।

अप +कार = अपकार- हमें कभी भी किसी का अपकार नहीं करना चाहिए।

प्रति + कार = प्रतिकार = हमें गलत सूचनाओं का प्रतिकार करना चाहिए।